10 उपयोगिता : सीमान्त उपयोगिता एवं कुल उपयोगिता

[UTILITY : MARGINAL UTILITY AND TOTAL UTILITY]

उपयोगिता का अर्थ
(MEANING OF UTILITY)

अर्थ (Meaning)—जब हम विभिन्न आवश्यकताओं को महसूस करते हैं तो उनकी सन्तुष्टि वस्तुओं अथवा सेवाओं के उपभोग द्वारा करते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि वस्तुओं या सेवाओं में कुछ विशेष गुण होता है जिससे हमारी आवश्यकताओं की सन्तुष्टि होती है। वस्तुओं या सेवाओं के इसी गुण या क्षमता को उपयोगिता कहते हैं। दूसरे शब्दों में, **वस्तुओं या सेवाओं में मानवीय आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने की जो क्षमता होती है, उसे ही उपयोगिता कहते हैं।** (Utility is the capacity of a commodity or service to satisfy human wants.) उदाहरण के लिए रोटी द्वारा भूख मिटाने की आवश्यकता की सन्तुष्टि होती है, अतः रोटी में उपयोगिता है। इसी प्रकार वस्त्र द्वारा शरीर ढँकने की आवश्यकता की सन्तुष्टि होती है, अतः वस्त्र में उपयोगिता है।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि **उपयोगिता तथा लाभदायकता** (Utility and Usefulness) में अन्तर है। सामान्यतः हम उन्हीं वस्तुओं को उपयोगी समझते हैं जो लाभदायक हों। जो वस्तु हानिकारक होती है, उसे हम उपयोगी नहीं समझते किन्तु अर्थशास्त्र में केवल लाभदायक वस्तुओं को ही उपयोगी नहीं समझा जाता। वस्तु चाहे लाभदायक हो या हानिकारक, यदि उसमें मानवीय आवश्यकता को सन्तुष्ट करने की क्षमता है तो उसे उपयोगी माना जाता है। उदाहरण के लिए जहर या मादक वस्तुएँ हानिकारक होती हैं लेकिन हानिकारक होते हुए भी ये अर्थशास्त्र में उपयोगी मानी जाती हैं क्योंकि उनसे मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। यदि शराबी को शराब की आवश्यकता है तो उसके लिए शराब में उपयोगिता होगी, भले ही शराब मनुष्य के लिए हानिकारक है। पुनः उपयोगिता का नैतिकता से भी सम्बन्ध नहीं होता है। दूसरे शब्दों में, वस्तु का उपभोग नैतिक हो या अनैतिक, यदि उससे किसी आवश्यकता विशेष की सन्तुष्टि होती है तो उसे उपयोगी कहा जायेगा।

पुनः उपयोगिता वस्तुगत (Objective) नहीं होती बल्कि यह आत्मगत (Subjective) एवं सापेक्ष (Relative) होती है। दूसरे शब्दों में, उपयोगिता व्यक्ति विशेष की मनोवृत्ति एवं विभिन्न परिस्थितियों पर निर्भर करती है। एक ही वस्तु की उपयोगिता विभिन्न व्यक्तियों के लिए अलग-अलग होती है। उदाहरण के लिए, एक शिक्षक के लिए कलम की उपयोगिता है लेकिन एक कृषक के लिए कलम की उपयोगिता कुछ भी नहीं है। इसी प्रकार एक व्यक्ति के लिए विभिन्न समय एवं स्थान में वस्तु की उपयोगिता भिन्न-भिन्न होती है। उदाहरण के लिए कॉलेज अथवा घर में शिक्षक के लिए कलम की उपयोगिता है किन्तु उसी शिक्षक के लिए मन्दिर में कलम की कोई उपयोगिता नहीं है। पुनः किसी व्यक्ति के लिए जाड़े में ऊनी कपड़ों की बहुत ही उपयोगिता होती है किन्तु गर्मी के मौसम में ऊनी वस्त्रों की उसके लिए कोई उपयोगिता नहीं होगी। इस प्रकार

Scanned with CamScanner

उपयोगिता एक आत्मगत एवं सापेक्षिक (Subjective and Relative) धारणा है जो व्यक्ति एवं उसकी परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहती है।

उपयोगिता आवश्यकता की तीव्रता पर निर्भर करती है। जब हमारे लिए किसी वस्तु की आवश्यकता अधिक तीव्र होती है तो उसकी उपयोगिता भी हमारे लिए अधिक होती है। दूसरी ओर, यदि किसी वस्तु की आवश्यकता हमारे लिए कम है तो उसकी उपयोगिता भी कम होगी। उदाहरण के लिए, एक भूखे व्यक्ति के लिए रोटी की उपयोगिता अधिक होगी किन्तु भूखे नहीं होने की स्थिति में रोटी की उपयोगिता उसके लिए बहुत कम अथवा नहीं के बराबर होगी।

परिभाषा (Definition)—विभिन्न विद्वानों ने उपयोगिता की परिभाषा निम्न प्रकार दी है :

1. **प्रो. वॉघ के अनुसार, "वस्तुओं में उपयोगिता मानवीय आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने की क्षमता है।"**

"Utility is the power of commodity to satisfy human wants."

—*Waugh*

2. **फ्रेजर के अनुसार, "कुल मिलाकर आधुनिक वर्षों में, विस्तृत परिभाषा पसन्द की जाती है और उपयोगिता का अर्थ 'इच्छा करने' से लिया जाता है, न कि सन्तोषप्रदता से।"**

"On the whole, in recent years, the wider definition is preferred and utility is identified with desireness rather than with satisfyingness."

—*Fraser*

उपयोगिता की विशेषताएँ
(CHARACTERISTICS OF UTILITY)

उपयोगिता की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

1. **उपयोगिता आवश्यकता द्वारा उत्पन्न होती है** (Utility is created by Want)—आवश्यकता किसी वस्तु का उपभोग करने के लिये हमें प्रेरित करती है। यदि हमें किसी खास वस्तु की आवश्यकता नहीं हो तो हमारे लिये उसमें उपयोगिता भी नहीं होगी। उदाहरणार्थ, एक स्वस्थ व्यक्ति के लिये बुखार की दवा की कोई उपयोगिता नहीं होती है।

2. **उपयोगिता मनोवैज्ञानिक होती है** (Utility is Psychological)—उपयोगिता मनोवैज्ञानिक होती है, जिसे हम केवल अनुभव कर सकते हैं। इसे देख या स्पर्श नहीं कर सकते। यही कारण है किसी खास वस्तु की उपयोगिता अलग-अलग मनुष्यों के लिये अलग-अलग होती है।

3. **उपयोगिता व्यक्तिगत और सापेक्षिक होती है** (Utility is individual and relative)—उपयोगिता व्यक्तिगत और सापेक्षिक होती है, अर्थात् यह व्यक्ति विशेष के स्वभाव, उसकी आदत, रुचि और अन्य परिस्थितियों पर निर्भर करती है। यही कारण है कि एक वस्तु की उपयोगिता एक व्यक्ति के लिये होती है, तो दूसरे के लिये नहीं होती है। उदाहरणतः, जो व्यक्ति सिगरेट पीता है, उसके लिये उसकी उपयोगिता है जबकि सिगरेट नहीं पीने वालों के लिये इसकी कोई उपयोगिता नहीं होती है।

4. **उपयोगिता तथा लाभदायकता में भिन्नता होती है** (Utility differs from Profitability)—सामान्यतया जिन वस्तुओं में लाभदायकता होती है, उसे ही उपयोगी समझा जाता है अर्थात केवल लाभदायक वस्तुओं में ही उपयोगिता होती है। किन्तु अर्थशास्त्र में उपयोगिता का सम्बन्ध केवल लाभदायकता से नहीं होता है। वस्तु लाभदायक हो या हानिकारक, यदि उससे मानवीय आवश्यकताओं की सन्तुष्टि होती है तो अर्थशास्त्र में उसे उपयोगी माना जाता है, अर्थात् उसमें उपयोगिता है। उदाहरण के लिये विष एवं शराब हानिकारक वस्तुएँ हैं किन्तु

Scanned with CamScanner

अर्थशास्त्र की दृष्टि से उनकी उपयोगिता है, क्योंकि उनसे मानवीय आवश्यकता की सन्तुष्टि होती है।

5. **उपयोगिता केवल वस्तुगत नहीं होती** (Utility is not only objective)—उपयोगिता केवल वस्तुगत नहीं होती बल्कि यह मनुष्य की इच्छा इत्यादि पर भी निर्भर करती है। उदाहरण के लिये, एक भूखे व्यक्ति के लिये भोजन की उपयोगिता होती है, जबकि जो व्यक्ति भूखा नहीं है, उसके लिये भोजन की उपयोगिता नहीं होती है। यदि उपयोगिता केवल वस्तुगत रहती तो भूखा या न भूखा दोनों व्यक्तियों के लिये भोजन की उपयोगिता होती।

6. **उपयोगिता आवश्यकताओं की तीव्रता पर निर्भर करती है** (Utility depends upon the intensity of Wants)—किसी वस्तु की आवश्यकता जितनी तीव्र होगी उसकी उपयोगिता भी उतनी ही तीव्र होगी। इसके विपरीत, वस्तु की आवश्यकता जितनी कम होगी उसकी उपयोगिता भी उतनी ही कम होगी। इसी प्रकार, किसी वस्तु की उपयोगिता की तीव्रता दो अलग-अलग व्यक्तियों के लिये भी अलग-अलग होती है। इतना ही नहीं, एक ही वस्तु की आवश्यकता की तीव्रता एक ही व्यक्ति के लिये दो अलग-अलग अवधियों में अलग-अलग होती है।

क्या उपयोगिता को मापा जा सकता है ?
(CAN UTILITY BE MEASURED ?)

उपयोगिता एक मनोवैज्ञानिक धारणा (Psychological concept) है। यह अलग-अलग व्यक्ति के लिये अलग-अलग होती है। अतः इसकी माप प्रत्यक्ष रूप से नहीं की जा सकती है। किन्तु **प्रो. मार्शल** के अनुसार उपयोगिता की माप मुद्रा रूपी मापदण्ड से की जा सकती है। किसी वस्तु के लिये हम जितना मूल्य देने के लिये तैयार होते हैं, वस्तुतः वही उपयोगिता का मूल्य होता है। कोई भी व्यक्ति वस्तु की उपयोगिता से अधिक मूल्य देने के लिये तैयार नहीं हो सकता है। उदाहरणतः, अमित एक घड़ी के लिये 800 रु. देने को तैयार है अतः घड़ी की उपयोगिता 800 रु. के बराबर हुई।

किन्तु **हिक्स** (Hicks), **एलेन** (Allen) एवं **परेटो** (Pareto) आदि अर्थशास्त्री मार्शल के विचार से सहमत नहीं हैं। इनके अनुसार उपयोगिता की माप सम्भव नहीं है क्योंकि :

(i) यह एक मनोवैज्ञानिक धारणा है।

(ii) उपयोगिता अलग-अलग व्यक्तियों के लिये अलग-अलग होती है। इतना ही नहीं, एक ही वस्तु से एक ही व्यक्ति को अलग-अलग अवधियों में अलग-अलग उपयोगिता मिलती है।

(iii) मुद्रा-रूपी मापदण्ड स्थिर नहीं होता है, क्योंकि मुद्रा के मूल्य में भी परिवर्तन होता रहता है। अतः उपयोगिता को मापा नहीं जा सकता।

उपयोगिता के प्रकार
(KINDS OF UTILITY)

उपयोगिता दो प्रकार की होती है :

(I) **सीमान्त** उपयोगिता (Marginal Utility),

(II) **कुल** उपयोगिता (Total Utility) एवं

(III) **औसत** उपयोगिता (Average Utility)।

Scanned with CamScanner